>

Title: Issue regarding pollution caused by leather tannery and slaughter houses in Unnao district, Uttar Pradesh.

श्रीमती अन्नू टण्डन (उन्नाव): सभापति महोदय, मैं आज एक अत्यंत महत्वपूर्ण समस्या, यानी प्रदूषण की ओर आपका ध्यान आकर्षित कराना चाहती हूं, जो कि हेवी मेटल, कैमिकल और बायो कैमिकल द्वारा होती है और देश के लिए एक बहुत गंभीर समस्या स्वास्थ्य के नज़रिए से होती जा रही है। आज भारत एक तरफ तो तेज़ी से बढ़ रहा है और किसानी के अलावा उद्योग भी लग रहे हैं, लेकिन उद्योग लगने की वजह से जंगल साफ किए जा रहे हैं और ग्लोबल वार्मिंग के मसले से तो हम जूझ ही रहे हैं। वर्ल्ड बैंक द्वारा अनुमान लगाया गया है कि प्रदूषण से हिन्दुस्तान का नुक़सान क़रीब 4365 करोड़ रुपए यानी 4.5 ग्रास डोमेस्टिक प्रोडक्टस होता है। इसमें 59 प्रतिशत प्रदूषण पानी की वजह से होता है और सबसे ज्यादा हवा या पानी की वजह से होता है। मेरे लोक सभा क्षेत्र उन्नाव में भूमिगत पानी बहुत ज़हरीला एवं अत्यधिक प्रदूषित होता जा रहा है, क्योंकि यहां कि जो लैदर टैनरी यूनिट्स हैं और स्लॉटर हाउसिज़ हैं, वे बेधड़क अपना प्रदूषण आस-पास के इलाकों में फैला रहे हैं और अपना गंदा पानी जलस्रोतों में छोड़ रहे हैं, कभी-कभी वे ज़मीन में बोरिंग करके भी डाल रहे हैं। इस बात की पुष्टि सैन्ट्रल ग्राउण्ड वॉटर बोर्ड और इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ टॉक्सीकोलॉजी रिसर्च की रिपोर्ट में भी पायी गई है। कुछ समय पूर्व मेरी मुलाकात सीपीसीबी के अधिकारियों से हुई थी और उन्होंने लाइफोलाइज़र टैक्नोलॉजी के बारे में बताया, जिसमें वैक्यूम द्वारा लैदर को सुखाया जा सकता है। उसमें नमक का इस्तेमाल बहुत कम होगा और नमक का इस्तेमाल कम होने की वजह से प्रदूषण कम हो सकता है। लेकिन चमड़ा उद्योग इसकी ख़िलाफ़त इसलिए कर रही है, क्योंकि उन्हें अपने पुराने ढंग को बनाए रखना है। अपने मुनाफ़े को बनाए रखना है और कोई बदलाव वे नहीं चाहते हैं। एक तरफ इंसानों की ज़िंदगी और दूसरी तरफ उद्योगपतियों का मुनाफ़ा। यदि हम ही नहीं बचेंगे, हमारे उन्नाव की पीढ़ी जो कि समाप्त होने के कग़ार पर है, उसको उद्योग से क्या मतलब रहेगा। इन उद्योगपतियों के बच्चे बिसलैरी का पानी पी सकते हैं, लेकिन एक ग़रीब का बच्चा हैण्डपम्प का पीला, गंदा, महक वाला पानी कैसे पीए?

सभापति महोदय, मैं समझती हूं कि उद्योग हमारी जनता को रोज़ग़ार देता है और हमारे विकास के लिए बहुत आवश्यक है, लेकिन मैं आपके द्वारा सभी संबंधित मंत्रालयों से यह अनुरोध करना चाहती हूं कि लैदर टैनरी यूनिट्स और स्लॉटर हाउसिज़ चलाने वाले उद्योगपतियों को आग्रह करें, कोई ऐसी पॉलिसी लाएं, यदि लाइफोलाइज़र टैक्नोलॉजी उन्हें नापसंद हो, तो कोई भी ऐसी टैक्नोलॉजी को अपनाएं जिसमें नमक का इस्तेमाल कम हो। नमक का इस्तेमाल कम होगा तो क्रोमियम का इस्तेमाल कम होगा, क्रोमियम का इस्तेमाल कम होगा, तो पानी का इस्तेमाल कम होगा और उससे हम प्रदूषण कम कर सकते हैं। कोई भी नई टैक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके हमारे उन्नाव क्षेत्र और पूरे हिन्दुस्तान को प्रदूषण से बचाने का सरकार काम करे। धन्यवाद।

श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ): महोदय, मैं श्रीमती अन्नू टण्डन द्वारा उठाए गए मुद्दे से स्वयं को संबद्ध करता हूं।